आज कि मुरली का सार ----- Date: 10-05-2014

बाबा ने कहा, में जब आता हूं तो तुम छोटे बड़े सब की वानप्रस्थ अवस्था होती हैं, अगर तुम मेरी श्रीमत् पर चल कर पावन बनेंगे तो तुम मुक्ति और जीवनमुक्ति में जायेंगे. नहीं तो मुक्ति में हर एक को जाना ही हैं.

हम सब जानते हैं, बाबा आये हैं हम सब को वापस घर ले जाने. बाबा ने आज स्पष्ट कहा की कोई चाहे ना चाहे, जबरदस्ती भी हिसाब-किताब चुक्तू कराके सब को परमधाम, अपने धर तो वापस ले कर ही जायेंगे.

बाबा ने बार-बार कहा की अब हमारी सब की वानप्रस्थ अवस्था हैं. पढाई पर पूरा ध्यान देना हैं.

1. क्या हैं वानप्रस्थ अवस्था?

लौकिक में 60 वर्ष से ऊपर की आयु वालों के लिए वानप्रस्थ अवस्था कही जाती हैं, ज्ञान में बाबा का पार्ट जब शुरु होता हैं तब से सब मनुष्यों की वानप्रस्थ अवस्था शुरु हो जाती हैं.

ज्ञान में वानप्रस्थ अवस्था का मतलब हैं, वाणी से परे जाना और पुराना शरीर और पुरानी दुनिया से वैराग्य आना.

बाबा आये है हम सब आत्माओं को सतोप्रधान बना कर अपने घर, परमधाम ले जाने के लिये. बाबा ने हमें समझाया हैं की आत्मा को सतोप्रधान बनाने की विधि हैं, एकान्त में बैठ, खुद को आत्मिक स्थिति (अशरीरी स्थिति) में स्थित कर परमप्रिय-परमपिता-परमआत्मा को परमधाम में याद करो. परमधाम को ही वाणी से परे स्थान कहा जाता हे. इसी विधि से हमारे पास्ट 63 जन्मो के विकर्म, जो आत्मा में विकारों के रुप में हैं, वो भस्म हो जाते हैं और आत्मा वापस संपूर्ण सतोप्रधान बन जायेगी. बाबा ने आज कहा सतोप्रधान (पावन) आत्मा ही अपने घर, परमधाम जा सकेगी. अगर आत्मा इस विधि से सतोप्रधान न बनी तो सजायें खाकर, हिसाब-किताब चुकतू कर सतोप्रधान बनना पड़ेगा.

वानप्रस्थ अवस्था का दूसरा मतलब हैं, पुराने शरीर, साधन, सम्पति ओर सम्बन्ध से संपूर्ण वैराग्यता. इस पूरषोतम संगमयुग पर मेरा मन अगर माया के वश हो कर पुराने शरीर, साधन, सम्पति ओर सम्बन्ध में भटक गया तो ईश्वरीय प्राप्तिओं से हम वंचित रह जायेंगे. इसलिए बाबा हमें पुराने शरीर, साधन, सम्पति ओर सम्बन्ध से संपूर्ण वैराग्य दिलाते हैं ओर सच्चाई, सादगी ओर स्वच्छता को हमारे जीवन में धारण करवाते हैं.

2. बाबा ने कहा, ईश्वरीय पढाई पर पूरा ध्यान देना हैं.

इस ईश्वरीय पढाई की दो बातें मुख्य हैं. स्वयं की स्थिति आत्मा अभिमानी बनाने की प्रैक्टिस करना ओर दैवी गुणों की धारणा करना.

आत्म-अभिमानी स्थिति बनाने के लिये, लंबे काल के लिये साईलेन्स में रहने का ओर अंन्तरमुखि अवस्था में रहने का पुरुषार्थ करना चाहिये. खुद की आत्मिक स्थिति को बढ़ाने के लिए नीचे दिये गये स्वमानो को बार-बार स्मृति में लाने का अभ्यास करना हैं.

में आत्मा, परमप्रिय-परमपिता-परमआत्मा शिवबाबा का बच्चा हूं.

में शांत ओर पवित्र स्वरूप आत्मा हूं.

में ब्रुकुटि में चमकता हुआ सुंदर सितारा हूं.

में आत्मा, मास्टर सर्वशक्तिमान हूं.

अंन्तरमुखि अवस्था में रहने के लिये बाबा ने बताया हैं, बहार का देखते हुए भी न देखो, सुनते हुए भी ना सुनो. एक बाप से ही सुनो. ये प्रैक्टिस करनी हैं.

दैवी गुणों की धारणा के लिए सबसे पहले ये चेक करो, हम अपने मन-वचन-कर्म से किसको दुख तो नहीं देते हैं.

ॐ शांति.